



बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में विविध अधिगम आवश्यकताओं को संबोधित करने में समावेशी शिक्षाशास्त्र की भूमिका

Naveen Kumar Yadav

Assistant Professor, Department of Education and Training, Chaudhary Charan Singh Degree College, Heonra, Etawah

Email: naveencpspg2019@gmail.com

Received: 07 December 2025 | Accepted: 23 December 2025 | Published: 30 December 2025

सार

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बहुसांस्कृतिक कक्षाओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है, जहाँ विभिन्न भाषाई, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमियों से आने वाले शिक्षार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। ऐसी कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं को समान अवसर प्रदान करना एक बड़ी शैक्षणिक चुनौती है। यह शोध पत्र बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में समावेशी शिक्षाशास्त्र की भूमिका का अध्ययन करता है, विशेष रूप से विभेदित शिक्षण, समानता तथा अधिगम के लिए सार्वभौमिक अभिकल्प (यूडीएल) के संदर्भ में। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि समावेशी शिक्षाशास्त्र शिक्षार्थियों की सहभागिता, शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक समरसता को प्रभावी रूप से बढ़ावा देता है।

मुख्य शब्द: समावेशी शिक्षाशास्त्र, बहुसांस्कृतिक कक्षाएँ, विभेदित शिक्षण, समानता, यूडीएल

1. भूमिका

वैश्वीकरण, प्रवासन तथा व्यापक सामाजिक परिवर्तनों के प्रभावस्वरूप समकालीन युग की कक्षाएँ अत्यधिक बहुसांस्कृतिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी में शैक्षणिक संस्थानों के समक्ष यह एक प्रमुख चुनौती के रूप में उभरा है कि विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों, लिंग पहचान तथा अधिगम शैलियों से आने वाले शिक्षार्थियों को एक ही कक्षा में किस प्रकार प्रभावी और न्यायसंगत शिक्षा प्रदान की जाए। वर्तमान कक्षाओं में शिक्षार्थियों की यह विविधता केवल एक जनसांख्यिकीय तथ्य नहीं है, बल्कि यह शैक्षणिक नीतियों, शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं के गहन पुनर्विचार की माँग करती है।

पारंपरिक एकरूप शिक्षण पद्धतियाँ, जो सभी शिक्षार्थियों को समान मानकर एक जैसी शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करती हैं, इस प्रकार की विविधता को समुचित रूप से संबोधित करने में प्रायः असफल सिद्ध होती हैं। बैक्स (2019) के अनुसार, ऐसी एकरूप शिक्षण पद्धतियाँ सांस्कृतिक एवं भाषाई अल्पसंख्यक समूहों से आने वाले शिक्षार्थियों को हाशिए पर धकेल देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक उपलब्धि तथा आत्मसम्मान पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, गे (2018) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जब शिक्षक शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की उपेक्षा करते हैं, तो कक्षा में अलगाव की भावना उत्पन्न होती है, जो अधिगम प्रक्रिया में गंभीर बाधा बनती है।

ऐसे परिदृश्य में समावेशी शिक्षाशास्त्र एक प्रभावी और अपरिहार्य दृष्टिकोण के रूप में उभरता है। समावेशी शिक्षाशास्त्र का मूल सिद्धांत यह है कि प्रत्येक शिक्षार्थी की अद्वितीय आवश्यकताओं, क्षमताओं और पृष्ठभूमियों को स्वीकार किया जाए तथा शिक्षण-

अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार रूपांतरित किया जाए कि सभी शिक्षार्थियों को समान और गुणवत्तापूर्ण अधिगम अवसर प्राप्त हो सकें। टॉमलिनसन (2017) के अनुसार, समावेशी शिक्षाशास्त्र केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी प्रकार की शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताओं को संबोधित करने वाला एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र की वैश्विक आवश्यकता को यूनेस्को (2020) ने भी स्वीकार किया है। सतत विकास लक्ष्य-4 के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और समानतापूर्ण शिक्षा को वैश्विक प्राथमिकता के रूप में स्थापित किया गया है। भारतीय संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भी समावेशिता और समानता को शिक्षा व्यवस्था के मूलभूत स्तंभों के रूप में रेखांकित किया है। इस नीति में बहुभाषी शिक्षा, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा विभेदित शिक्षण को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।

लेडसन-बिलिंग्स (2021) द्वारा प्रतिपादित *सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र* की अवधारणा समावेशी शिक्षाशास्त्र का एक महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षकों को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पूँजी को पहचानना चाहिए तथा उसे शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। इसी संदर्भ में, मोल और गोंजालेज (2020) ने *ज्ञान के कोष* की अवधारणा प्रस्तुत की, जो इस तथ्य को रेखांकित करती है कि प्रत्येक शिक्षार्थी अपने परिवार और समुदाय से अर्जित ज्ञान, अनुभव और कौशल के साथ कक्षा में प्रवेश करता है, और इस ज्ञान को औपचारिक शिक्षण का आधार बनाया जाना चाहिए।

समावेशी शिक्षाशास्त्र का उद्देश्य केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करता है। निएटो और बोडे (2018) के अनुसार, बहुसांस्कृतिक शिक्षा का लक्ष्य ऐसे जागरूक नागरिकों का निर्माण करना है, जो विविधता का सम्मान करें और सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय एजेंट बन सकें। इस प्रकार, समावेशी शिक्षाशास्त्र न केवल शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है, बल्कि सामाजिक सामंजस्य, राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. समावेशी शिक्षाशास्त्र की अवधारणा

समावेशी शिक्षाशास्त्र वह शिक्षण दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य सभी शिक्षार्थियों को—चाहे उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई पृष्ठभूमि, शारीरिक या बौद्धिक क्षमता तथा अधिगम आवश्यकताएँ कुछ भी हों—समान, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण अधिगम अवसर प्रदान करना है। यह दृष्टिकोण विविधता को किसी समस्या या बाधा के रूप में नहीं, बल्कि अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध करने वाले एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में स्वीकार करता है। फ्लोरियन (2019) के अनुसार, समावेशी शिक्षाशास्त्र का केंद्रीय सिद्धांत यह है कि सभी शिक्षार्थी सीखने में सक्षम होते हैं और शिक्षकों का दायित्व है कि वे ऐसा शैक्षणिक वातावरण निर्मित करें, जो प्रत्येक शिक्षार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं और क्षमताओं को संबोधित कर सके। इस प्रकार, समावेशी शिक्षाशास्त्र पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त एकरूपता, मानकीकरण और चयनात्मकता की अवधारणाओं को चुनौती देता है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र का सैद्धांतिक आधार सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और समानता के सिद्धांतों में निहित है। सलामांका घोषणापत्र (1994) ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह स्थापित किया कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है तथा शैक्षणिक प्रणालियों को शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जाना चाहिए, न कि शिक्षार्थियों को शैक्षणिक प्रणाली के अनुरूप बनने के लिए बाध्य किया जाए। इस विचार को आगे बढ़ाते हुए एनस्को और फ्लोरियन (2020) ने स्पष्ट किया कि समावेशन केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग व्यवस्था करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने वाला एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र की अवधारणा को समझने के लिए इसके तीन प्रमुख आयामों पर विचार करना आवश्यक है। प्रथम आयाम *उपस्थिति* है, जिसका अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि सभी शिक्षार्थी सामान्य कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित हों और उन्हें अलग-थलग न किया जाए। बूथ और एनस्को (2016) के अनुसार, भौतिक उपस्थिति समावेशन की पहली और अनिवार्य शर्त है, किंतु मात्र

उपस्थिति ही पर्याप्त नहीं है। द्वितीय आयाम *सहभागिता* है, जिसके अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी शिक्षार्थी कक्षा की शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लें, अपनी बात रखने में सक्षम हों और उन्हें सुना जाए। तृतीय आयाम *उपलब्धि* से संबंधित है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और विकासोन्मुख अधिगम परिणाम सुनिश्चित करना है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र की एक प्रमुख विशेषता इसका शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण है। वायगोत्स्की (1978) के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के अनुसार, अधिगम मूलतः एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थी अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसी सिद्धांत के आलोक में समावेशी शिक्षाशास्त्र प्रत्येक शिक्षार्थी की सांस्कृतिक पहचान, भाषाई पृष्ठभूमि और पूर्व अनुभवों को अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानता है। हम्मंड (2020) के शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि जब शिक्षक शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पूँजी को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से एकीकृत करते हैं, तो शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमता, आत्मविश्वास और शैक्षणिक प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार देखा जाता है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र की एक अन्य महत्वपूर्ण अवधारणा *लचीलापन* है। मायर, रोज़ और गॉर्डन (2014) द्वारा प्रतिपादित *सार्वभौमिक अधिगम अभिकल्प* (यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग – यूडीएल) इस लचीले दृष्टिकोण का एक ठोस उदाहरण प्रस्तुत करता है। यूडीएल के तीन मूल सिद्धांत हैं—प्रतिनिधित्व के बहु साधन, कार्य एवं अभिव्यक्ति के बहु साधन, तथा सहभागिता के बहु साधन। इन सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षक विभिन्न अधिगम शैलियों, क्षमताओं और रुचियों वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को प्रभावी रूप से समायोजित कर सकते हैं, जिससे सभी के लिए अधिगम सुलभ और अर्थपूर्ण बनता है।

समावेशी शिक्षाशास्त्र का एक अनिवार्य घटक सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक प्रतिक्रियाशीलता है। पेरी (2021) के अनुसार, सांस्कृतिक रूप से प्रतिक्रियाशील शिक्षाशास्त्र शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को केवल स्वीकार ही नहीं करता, बल्कि उसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक सकारात्मक और सशक्त साधन बनाता है। बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं से आने वाले शिक्षार्थी एक साथ सीखते हैं। विल्किंसन और किंसेला (2019) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जब शिक्षक बहुसांस्कृतिक संसाधनों, उदाहरणों और संदर्भों का प्रयोग करते हैं, तो शिक्षार्थियों की सहभागिता बढ़ती है और उनकी अधिगम प्रेरणा सुदृढ़ होती है।

3. विभेदित शिक्षण

विभेदित शिक्षण एक गतिशील और सजग शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जो इस मूलभूत सत्य को स्वीकार करता है कि कोई भी दो शिक्षार्थी एक जैसे नहीं होते। यह शिक्षण की एक ऐसी प्रविधि है जिसमें विषयवस्तु, शिक्षण प्रक्रिया और मूल्यांकन — शिक्षण के इन तीनों मुख्य घटकों को प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत तैयारी के स्तर, रुचियों और सीखने की प्रोफ़ाइल के आधार पर सूक्ष्मता से अनुकूलित किया जाता है (टॉमलिंसन, 2014)। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा में प्रवेश करने वाला प्रत्येक बालक, चाहे वह किसी भी स्तर पर हो, उचित चुनौती का अनुभव करे, अर्थपूर्ण ढंग से सीखने में संलग्न रहे और अपनी पूरी क्षमता के अनुरूप प्रगति कर सके। यह एकरूपता के स्थान पर लचीलेपन, एकल विधि के स्थान पर विकल्पों, और स्थिर अपेक्षाओं के स्थान पर व्यक्तिगत विकास पर बल देता है।

बहुसांस्कृतिक कक्षा के संदर्भ में, विभेदित शिक्षण एक विशेष रूप से शक्तिशाली और आवश्यक उपकरण सिद्ध होता है। ऐसी कक्षा में विविधता केवल अकादमिक स्तर तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि भाषा, सांस्कृतिक पूँजी, पूर्व ज्ञान और शैक्षणिक अनुभवों में भी व्याप्त होती है। एक ऐसा छात्र जिसकी घरेलू भाषा अंग्रेज़ी या हिंदी नहीं है, वह उसी गति से एक पाठ को नहीं पढ़ पाएगा जिस गति से एक द्विभाषी छात्र पढ़ता है। एक ऐसा छात्र जो किसी विशेष सांस्कृतिक संदर्भ से है, किसी ऐतिहासिक घटना को दूसरे दृष्टिकोण से समझ सकता है। विभेदित शिक्षण इन अंतरों को कमजोरी नहीं, बल्कि एक समृद्ध संसाधन मानते हुए, शिक्षण को इनके अनुरूप ढालता है। उदाहरण के लिए, विषयवस्तु को विभेदित करने के लिए शिक्षक एक ही अवधारणा को अलग-अलग पठन स्तर की

सामग्री, विभिन्न भाषाओं के संसाधन, या ऑडियो-विजुअल माध्यमों के जरिए प्रस्तुत कर सकता है। प्रक्रिया को विभेदित करने के लिए वह छात्रों को अलग-अलग कार्य दे सकता है—कुछ छात्र मूलभूत अवधारणा पर काम करते हुए एक मॉडल बनाएँ, जबकि अन्य उन्नत छात्र उसी अवधारणा पर एक शोध प्रबंध तैयार करें। मूल्यांकन को विभेदित करने के लिए छात्रों को अपनी समझ प्रदर्शित करने के विविध तरीके चुनने का विकल्प दिया जा सकता है—जैसे एक निबंध लिखना, एक प्रस्तुतीकरण देना, एक कहानी बोर्ड बनाना या एक नाटक तैयार करना। इस प्रकार, विभेदित शिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि विभिन्न पृष्ठभूमि, भाषा और क्षमता वाले सभी छात्रों को सीखने के समान अवसर मिलें, न कि केवल एक जैसे संसाधन। यह कक्षा को एक ऐसी सहयोगात्मक कार्यशाला में बदल देता है, जहाँ हर कोई अपनी गति से, अपने तरीके से सीखता है, और सभी की अद्वितीय योगदान को मूल्य दिया जाता है।

4. समानता और शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में 'समानता' (Equity) की अवधारणा अक्सर 'समरूपता' के साथ भ्रमित हो जाती है, जबकि दोनों में मूलभूत अंतर है। समरूपता का तात्पर्य है सभी विद्यार्थियों को एक जैसा, एक समान मात्रा और प्रकार का संसाधन देना। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि सबको एक जैसी किताब, एक जैसा शिक्षण और एक जैसा मूल्यांकन मिलेगा, तो न्याय स्थापित हो जाएगा। किंतु, वास्तविकता यह है कि विविध पृष्ठभूमि और आवश्यकताओं वाले छात्रों को एक ही चीज़ देना अक्सर असमानता को और गहरा कर देता है। इसके विपरीत, समानता का वास्तविक अर्थ है सभी विद्यार्थियों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं, चुनौतियों और परिस्थितियों के अनुसार समर्थन और संसाधन उपलब्ध कराना, ताकि वे समान शैक्षणिक परिणामों तक पहुँचने में सक्षम हो सकें (बैक्स एवं बैक्स, 2019)। इसे एक सरल उदाहरण से समझा जा सकता है: यदि तीन अलग-अलग कद के व्यक्तियों को एक समान ऊँची दीवार के पीछे देखने का अवसर दिया जाए (समरूपता), तो सबसे लंबा व्यक्ति आसानी से देख लेगा, मध्यम कद का व्यक्ति संघर्ष करेगा, और सबसे छोटा व्यक्ति बिल्कुल नहीं देख पाएगा। समानता का सिद्धांत प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत के अनुसार उनके पैरों के नीचे एक अलग ऊँचाई का मंच (स्टैंड) देने का समर्थन करता है, ताकि तीनों ही समान रूप से दीवार के पार देख सकें। यह 'न्याय' की भावना पर आधारित है।

बहुसांस्कृतिक कक्षा में समानता-आधारित शिक्षण का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यहाँ हाशिए पर स्थित और ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के अनेक छात्र होते हैं। इनमें वे छात्र शामिल हैं जो भाषाई अल्पसंख्यक हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति कमज़ोर है, जो प्रवासी पृष्ठभूमि से आते हैं, या जो सामाजिक रूप से हाशिए के समुदायों से संबंधित हैं। पारंपरिक, समरूपता वाली व्यवस्था में इन छात्रों को अक्सर 'कमज़ोर' या 'पिछड़ा' का टैग लगाकर उपेक्षित कर दिया जाता है। समानता-आधारित दृष्टिकोण इस धारणा को चुनौती देता है। यह मानता है कि इन छात्रों की 'कमी' उनमें नहीं, बल्कि उस व्यवस्था में है जो उनकी पृष्ठभूमि, भाषा और संस्कृति को मान्यता नहीं देती और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढालने से इनकार करती है।

जब कक्षा में समानता के सिद्धांतों को अपनाया जाता है, तो इसका सीधा और सकारात्मक प्रभाव वंचित समूहों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और आत्मविश्वास पर पड़ता है। शैक्षणिक उपलब्धि इसलिए बढ़ती है क्योंकि शिक्षण उनकी समझ के स्तर से शुरू होता है। उदाहरण के लिए, एक ऐसे छात्र को, जो अंग्रेजी में निपुण नहीं है, विज्ञान की एक जटिल अवधारणा सिखाने के लिए उसे पहले सरल भाषा में समझाया जाएगा, आरेखों का उपयोग किया जाएगा, या उसकी मातृभाषा के संसाधनों की सहायता ली जाएगी। यह सहायक ढाँचा (स्कैफोल्डिंग) उसे अवधारणा को आत्मसात करने में मदद करता है, जिससे उसका प्रदर्शन सुधरता है। साथ ही, आत्मविश्वास इसलिए बढ़ता है क्योंकि समानता-आधारित कक्षा में हर छात्र की पहचान और अनुभव को मूल्य दिया जाता है। जब एक छात्र यह देखता है कि उसकी भाषा, उसके अनुभव या उसकी सीखने की शैली को कक्षा में स्थान मिल रहा है, तो उसमें स्वीकृति और स्वामित्व की भावना पैदा होती है। उसे लगता है कि यह कक्षा उसके लिए भी है, न कि केवल कुछ 'चुनिंदा' छात्रों के लिए। यह

भावनात्मक सुरक्षा सीखने के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार करती है और उसे जोखिम लेकर प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने में सहायक होती है।

इस प्रकार, समानता और विभेदित शिक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं। विभेदित शिक्षण समानता को प्राप्त करने का व्यावहारिक मार्ग है। यह शिक्षक को यह साधन देता है कि वह प्रत्येक छात्र की अलग-अलग आवश्यकता का आकलन करे और उसके अनुरूप समर्थन का ढाँचा तैयार करे। यह दृष्टिकोण केवल नैतिक रूप से सही ही नहीं है, बल्कि यह शैक्षणिक दक्षता की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावी है, क्योंकि यह कक्षा में विद्यमान समस्त मानवीय क्षमता का दोहन करके सामूहिक सीखने को समृद्ध बनाता है।

5. अधिगम के लिए सार्वभौमिक अभिकल्प

अधिगम के लिए सार्वभौमिक अभिकल्प (यूडीएल) समावेशी शिक्षा का एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक और पूर्व-निवारक ढाँचा है। यह वास्तुकला के 'सार्वभौमिक डिजाइन' की अवधारणा से प्रेरित है, जहाँ भवनों को आरंभ से ही इस प्रकार डिजाइन किया जाता है कि वे सभी लोगों—बुजुर्गों, बच्चों, विकलांगों सहित—के लिए सुलभ हों। ठीक उसी प्रकार, यूडीएल का उद्देश्य पाठ्यक्रम और शैक्षणिक वातावरण को आरंभिक नियोजन अवस्था से ही इतना लचीला और बहुआयामी बनाना है कि वह **शैक्षिक विविधता की एक विस्तृत श्रृंखला का सामना कर सके और सभी प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए प्रभावी सीखने के अवसर सृजित करे** (कास्ट, 2018)। यह दृष्टिकोण यह मानकर नहीं चलता कि छात्रों को सीखने के लिए स्वयं को ढालना चाहिए, बल्कि यह मानता है कि शिक्षण को हर बच्चे के लिए काम करने के लिए ढाला जाना चाहिए। यह 'बाद में ठीक करने' वाली समस्या-समाधान की बजाय 'शुरुआत से ही समावेश' की रणनीति पर कार्य करता है।

यूडीएल का दर्शन तंत्रिका विज्ञान (न्यूरोसाइंस) पर आधारित है, जो बताता है कि मस्तिष्क तीन प्रमुख नेटवर्क के माध्यम से सीखता है: **अनुभव प्राप्त करने का नेटवर्क (The 'WHAT' of Learning)**, **कार्य करने का नेटवर्क (The 'HOW' of Learning)**, और **संलग्न होने का नेटवर्क (The 'WHY' of Learning)**। इन तीनों नेटवर्कों की विविधता और व्यक्तिगत अंतर को संबोधित करने के लिए ही यूडीएल के **तीन मुख्य सिद्धांत** विकसित किए गए हैं। इन सिद्धांतों का पालन करते हुए शिक्षक एक ऐसा समृद्ध अधिगम वातावरण रच सकते हैं, जो बहुसांस्कृतिक कक्षा की जटिल आवश्यकताओं को स्वाभाविक रूप से पूरा करता है।

यूडीएल के तीन प्रमुख सिद्धांत एवं उनका विस्तार:

1. अधिगम सामग्री की बहुविध प्रस्तुतियाँ:

यह सिद्धांत 'अनुभव प्राप्त करने के नेटवर्क' से संबंधित है। इसका अर्थ है कि जानकारी और ज्ञान को प्रस्तुत करने के एक से अधिक तरीके उपलब्ध हों, ताकि विभिन्न संवेदी प्रणालियों और पूर्व ज्ञान स्तर वाले छात्र उसे ग्रहण कर सकें। एक ही प्रकार की प्रस्तुति (जैसे केवल मुद्रित पाठ) सभी के लिए कारगर नहीं होती।

- **दृश्य एवं श्रव्य विकल्प:** पाठ्य सामग्री को केवल लिखित रूप में न देकर, वीडियो, ऑडियो, इन्फोग्राफिक्स, चार्ट, मॉडल या मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- **भाषाई समायोजन:** जटिल शब्दावली या अवधारणाओं को सरल भाषा में समझाना, मुख्य भाषा के अलावा अन्य भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराना, या शब्दकोश व पृष्ठभूमि जानकारी का लिंक देना।
- **संदर्भ एवं पूर्व ज्ञान का सक्रियण:** नई जानकारी को छात्रों के मौजूदा ज्ञान और सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़कर समझाना। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक घटनाओं को स्थानीय या परिचित उदाहरणों से जोड़ना।
- **सूचना का सार एवं संरचना प्रदान करना:** पाठ का मुख्य विचार हाइलाइट करना, आउटलाइन या गाइड उपलब्ध कराना, ताकि जानकारी को संगठित करने में सहायता मिले।

2. क्रिया एवं अभिव्यक्ति के विविध माध्यम:

यह सिद्धांत 'कार्य करने के नेटवर्क' से जुड़ा है। इसमें छात्रों को यह दिखाने के विभिन्न तरीके उपलब्ध कराए जाते हैं कि उन्होंने क्या सीखा है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि मूल्यांकन छात्र की वास्तविक समझ को मापे, न कि केवल उसकी लिखने या बोलने की क्षमता को।

- **अभिव्यक्ति के विकल्प:** छात्रों को अपनी समझ प्रदर्शित करने के लिए लिखित परीक्षा, मौखिक प्रस्तुति, वीडियो निर्माण, कलात्मक प्रदर्शन (पोस्टर, मॉडल), डिजिटल प्रस्तुति, या समूह परियोजना जैसे विविध माध्यम चुनने की स्वतंत्रता देना।
- **संचार के लिए सहायक तकनीक:** लिखने में कठिनाई होने पर वॉइस-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर, प्रस्तुति के लिए मल्टीमीडिया टूल्स, या गणितीय समस्याओं के लिए डिजिटल मैनिपुलेटिव्स का उपयोग करने देना।
- **रणनीतियों एवं कौशलों का विकास:** बड़े कार्यों को छोटे चरणों में बाँटना, लक्ष्य निर्धारण व योजना बनाने के टेम्पलेट्स देना, और आत्म-मूल्यांकन के अवसर प्रदान करना।

3. सहभागिता के अनेक अवसर:

यह सिद्धांत 'संलग्न होने के नेटवर्क' को संबोधित करता है। इसका लक्ष्य छात्रों की रुचि, प्रेरणा और सीखने में निवेश को बढ़ाना है। यह मानता है कि प्रेरणा के स्रोत हर बच्चे में अलग-अलग होते हैं।

- **रुचि एवं प्रासंगिकता जोड़ना:** पाठ्य सामग्री को छात्रों के जीवन, हितों और सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़कर पेश करना। उन्हें विषयवस्तु के भीतर अपनी रुचि के उप-विषय चुनने का विकल्प देना।
- **चुनौती एवं सहायता का संतुलन:** कार्यों की कठिनाई का स्तर समायोज्य रखना, ताकि वह न तो बहुत आसान हो (जिससे ऊब हो) और न ही बहुत कठिन (जिससे हताशा हो)। आवश्यकतानुसार सहारा (स्कैफोल्डिंग) प्रदान करना।
- **सहयोगात्मक व सामाजिक अधिगम:** सीखने की प्रक्रिया में समूह चर्चा, साथी सहायता, भूमिका-निर्वाह और सामुदायिक परियोजनाओं को शामिल करना।
- **आत्म-नियमन को प्रोत्साहन:** छात्रों को अपने लक्ष्य तय करने, अपनी प्रगति पर नज़र रखने और अपनी सीखने की प्रक्रिया पर चिंतन करने में मदद करना। प्रतिपुष्टि देने के स्पष्ट व प्रोत्साहनकारी तरीके अपनाना।

बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में यूडीएल की प्रासंगिकता:

बहुसांस्कृतिक कक्षा, जहाँ भाषा, संस्कृति, पूर्व ज्ञान और सीखने की शैलियों में विविधता स्वाभाविक है, यूडीएल का सबसे उपयुक्त क्षेत्र है। यूडीएल आधारित शिक्षण इन विविधताओं को प्रभावी रूप से संबोधित करता है:

- **भाषाई विविधता:** बहुविध प्रस्तुति के सिद्धांत के तहत, शिक्षक पाठ को ऑडियो (श्रव्य), चित्रों (दृश्य) और सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकता है, जो एक गैर-देशी भाषा बोलने वाले छात्र की समझ में मदद करता है। अभिव्यक्ति के विविध माध्यम उसे अपनी समझ बिना भाषा की पूर्ण दक्षता के भी प्रदर्शित करने का रास्ता देते हैं।
- **सांस्कृतिक विविधता:** सहभागिता के सिद्धांत के अंतर्गत, पाठ्य सामग्री को विभिन्न सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों से जोड़ा जा सकता है। छात्रों को उनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान से संबंधित उदाहरणों या परियोजनाओं पर काम करने का विकल्प दिया जा सकता है, जिससे उनकी प्रेरणा और स्वामित्व की भावना बढ़ती है।
- **अधिगम शैलियों की विविधता:** यूडीएल का पूरा ढाँचा ही इस बात को स्वीकार करता है कि कुछ छात्र दृश्यों से बेहतर सीखते हैं, कुछ करके, तो कुछ सुनकर। तीनों सिद्धांत मिलकर सभी प्रकार की शैलियों—दृश्य, श्रव्य, गतिज (काइनेस्थेटिक), सामाजिक, एकान्त—को समाहित करने का प्रयास करते हैं।
- **विभिन्न अक्षमताएँ:** यूडीएल का डिजाइन ही ऐसा है कि यह दृष्टि, श्रवण, गतिशीलता या संज्ञानात्मक अक्षमताओं वाले छात्रों के लिए भी बाधा रहित अधिगम का मार्ग प्रशस्त करता है, क्योंकि विकल्पों की बहुलता पहले से ही निहित है।

निष्कर्षतः, यूडीएल केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि समावेशी शिक्षाशास्त्र का एक मौलिक दर्शन है। यह शिक्षकों को एक ऐसा लचीला और सशक्त ढाँचा प्रदान करता है जिसके माध्यम से वे बहुसांस्कृतिक कक्षा की जटिलताओं को एक चुनौती के बजाय एक समृद्ध अवसर के रूप में देख सकते हैं और प्रत्येक बालक की सफलता के लिए एक व्यवस्थित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि सीखने की प्रक्रिया में कोई भी बच्चा 'बाद में जोड़ा जाने वाला' न रह जाए, बल्कि आरंभ से ही उसका अभिन्न अंग बना रहे।

6. बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में समावेशी शिक्षाशास्त्र की भूमिका

बहुसांस्कृतिक कक्षा, जहाँ विविधता एक सामान्य और सतत वास्तविकता है, केवल एक शैक्षणिक स्थान नहीं बल्कि एक सूक्ष्म समाज है। ऐसे सामाजिक-शैक्षणिक परिवेश में, समावेशी शिक्षाशास्त्र केवल एक शिक्षण विधि नहीं रह जाता; यह एक सामाजिक आवश्यकता और एक मानवीय दायित्व बन जाता है। इसकी भूमिका अत्यंत बहुआयामी है, जो कक्षा की गतिशीलता को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित न रखकर उसे एक समग्र मानवीय विकास का केंद्र बना देती है।

सर्वप्रथम, समावेशी शिक्षाशास्त्र सकारात्मक, सुरक्षित एवं समर्थनकारी कक्षा वातावरण के निर्माण की आधारशिला रखता है। एक ऐसा वातावरण जहाँ प्रत्येक बालक बिना किसी डर, अपमान या भेदभाव के स्वयं को अभिव्यक्त कर सके। यह तब संभव होता है जब शिक्षक विविधताओं को 'समस्या' के बजाय 'संभावना' के रूप में देखता है और स्पष्ट रूप से यह संदेश देता है कि इस कक्षा में हर भाषा, हर संस्कृति, हर विचार और हर अनुभव का सम्मान किया जाएगा। ऐसा वातावरण छात्रों में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का भाव पैदा करता है, जो गहन सीखने के लिए एक पूर्व शर्त है। जब एक नवागंतुक प्रवासी बच्चा या एक अल्पसंख्यक समुदाय का बच्चा स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है, तभी वह जोखिम लेकर प्रश्न पूछ पाता है, अपने विचार साझा कर पाता है और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह संलग्न हो पाता है।

दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका है पारस्परिक सम्मान, सहानुभूति एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देना। समावेशी कक्षा में, विविधता पर चर्चा को प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक ऐसी गतिविधियाँ और पाठ्य सामग्री डिजाइन करते हैं जिनमें विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और जीवनशैलियों का सकारात्मक और गैर-रूढ़िवादी चित्रण हो। छात्र एक-दूसरे की कहानियाँ सुनते हैं, त्योहारों को साथ मनाते हैं, और विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से ऐतिहासिक घटनाओं या सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण करते हैं। इस प्रक्रिया में, वे न केवल 'सहिष्णु' बनते हैं, बल्कि सक्रिय रूप से एक-दूसरे की विशिष्टता का सम्मान करना सीखते हैं। वे यह समझने लगते हैं कि अलग होना कमतर होना नहीं है। यह सांस्कृतिक संवेदनशीलता एक ऐसा सामाजिक-भावनात्मक कौशल है जो उन्हें आजीवन एक वैश्विक नागरिक के रूप में काम आएगा।

तीसरी भूमिका में, यह सहयोगात्मक अधिगम को प्राकृतिक एवं प्रभावी ढंग से स्थापित करता है। समावेशी दृष्टिकोण प्रतिस्पर्धा पर सहयोग को तरजीह देता है। शिक्षक विषम क्षमताओं वाले समूह बनाते हैं, जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्र एक साझे लक्ष्य के लिए मिलकर काम करते हैं। एक छात्र तकनीकी ज्ञान ला सकता है, दूसरा रचनात्मक विचार, तीसरा संगठनात्मक कौशल। ऐसे में, हर छात्र महसूस करता है कि उसका कोई न कोई योगदान मूल्यवान है। यह सहयोग केवल अकादमिक कार्य तक सीमित नहीं रहता; यह सामाजिक संबंधों के सेतु बनाता है। भाषाई या सांस्कृतिक अवरोध टूटने लगते हैं, और छात्र मित्रता के नए आधार ढूँढ़ते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक एकाकीपन को दूर करती है और सामाजिक समरसता की भावना को मजबूत करती है, जो बहुसांस्कृतिक समाज के लिए अमूल्य है।

चौथी और सबसे गहरी भूमिका यह है कि समावेशी शिक्षाशास्त्र शिक्षार्थियों का सर्वांगीण सशक्तिकरण करता है। यह सशक्तिकरण तीन स्तरों पर होता है:

- **अकादमिक सशक्तिकरण:** जब शिक्षण प्रत्येक छात्र की क्षमता के अनुरूप होता है और मूल्यांकन उसकी वास्तविक समझ को मापता है, तो सफलता की संभावना बढ़ जाती है। एक ऐसा छात्र जो पारंपरिक परीक्षा में 'फेल' हो सकता था, वह एक प्रोजेक्ट या प्रस्तुति के माध्यम से अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन कर सकता है। इस सफलता का अनुभव उसे यह विश्वास दिलाता है कि "मैं सीख सकता हूँ।" यह आत्म-कार्यकुशलता (Self-Efficacy) की भावना उसे और अधिक सीखने के लिए प्रेरित करती है।
- **सामाजिक सशक्तिकरण:** समावेशी कक्षा में, हर छात्र की आवाज़ सुनी जाती है। उसे अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करने, अपनी भाषा में बोलने और अपने अनुभव साझा करने का अवसर मिलता है। इससे उसकी **सामाजिक पहचान** मजबूत होती है। वह स्वयं को समाज का एक मूल्यवान हिस्सा महसूस करता है, न कि एक बाहरी व्यक्ति। यह भावना उसके सामाजिक व्यवहार, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को प्रभावित करती है।
- **भावनात्मक सशक्तिकरण:** स्वीकृति और सम्मान का वातावरण छात्रों की भावनात्मक भलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अलगाव, हीनता या क्रोध की भावनाओं को कम करता है। छात्रों में सहानुभूति, धैर्य और संघर्ष समाधान जैसे भावनात्मक कौशल विकसित होते हैं। वे भावनात्मक रूप से अधिक लचीले और मजबूत बनते हैं, जो एक जटिल दुनिया में जीवन के लिए एक आवश्यक कौशल है।

अंततः, समावेशी शिक्षाशास्त्र बहुसांस्कृतिक कक्षा को एक लघु लोकतंत्र के रूप में विकसित करता है, जहाँ विविधता समृद्धि का स्रोत है, विभाजन का कारण नहीं। यह शिक्षा के माध्यम से एक न्यायपूर्ण, समतामूलक और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण की नींव रखता है। यह शिक्षकों और विद्यालयों को यह दायित्व सौंपता है कि वे केवल जानकारी के हस्तांतरण तक सीमित न रहकर, ऐसे मानवीय मूल्यों और सामाजिक कौशलों के वाहक बनें जो आने वाली पीढ़ी को न केवल सफल, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाएँ। इस प्रकार, बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में समावेशी शिक्षाशास्त्र की भूमिका अकादमिक से कहीं अधिक व्यापक और गहन है—यह मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक आदर्शों की रक्षा एवं पोषण करने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है।

7. चुनौतियाँ

समावेशी शिक्षाशास्त्र की सैद्धांतिक प्रासंगिकता और नैतिक अनिवार्यता निर्विवाद है, किंतु जब बात इसके व्यावहारिक और प्रभावी क्रियान्वयन की आती है, तो विद्यालयों और शिक्षकों के समक्ष कई गंभीर एवं जटिल चुनौतियाँ उभरकर सामने आती हैं। ये चुनौतियाँ अक्सर आपस में गुंथी हुई हैं और भारत जैसे विशाल, विविध तथा संसाधनों के असमान वितरण वाले देश के संदर्भ में और भी विकराल रूप धारण कर लेती हैं। इनका सामना किए बिना समावेश एक खोखला नारा बनकर रह जाने का खतरा है।

सबसे प्रमुख चुनौती शिक्षकों का अपर्याप्त एवं गुणवत्ताहीन प्रशिक्षण है। अधिकांश शिक्षक शिक्षण प्रशिक्षण (बी.एड.) अथवा प्रा (डी.एल.एड.) के दौरान समावेशी शिक्षाशास्त्र के बारे में केवल सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करते हैं, जबकि व्यावहारिक कक्षा प्रबंधन, विभेदित शिक्षण रणनीतियों, या विशिष्ट अक्षमताओं वाले बच्चों के साथ काम करने का हस्तक्षेपात्मक अनुभव उन्हें नहीं मिल पाता। जब एक शिक्षक बिना ठोस कौशल के एक बहुभाषी और बहुक्षमता वाली कक्षा में होता है, तो वह भ्रमित और अभिभूत महसूस कर सकता है। नतीजतन, वह पुरानी, एकरूपता वाली शिक्षण पद्धतियों की ओर लौट जाता है या विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को केवल शारीरिक रूप से कक्षा में बैठा देने को ही समावेश समझ लेता है। यह प्रशिक्षण की कमी शिक्षक के आत्मविश्वास और क्षमता दोनों को प्रभावित करती है।

दूसरी बड़ी चुनौती भौतिक, शैक्षणिक और मानवीय संसाधनों की भारी कमी है। समावेशी शिक्षा के लिए केवल इच्छाशक्ति पर्याप्त नहीं है; इसके लिए एक सहायक ढाँचे की आवश्यकता होती है। अधिकांश सरकारी स्कूलों में विशेष शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त सहायक कर्मचारियों, परामर्शदाताओं या चिकित्सकों का अभाव है। दृष्टिबाधित छात्रों के लिए ब्रेल साहित्य, श्रवण बाधित छात्रों के लिए सुनने

में सहायक उपकरण, या शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के लिए रैंप और शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएँ अक्सर अनुपस्थित रहती हैं। शैक्षणिक संसाधनों के मामले में भी, विभिन्न भाषाओं और स्तरों में बहुसांस्कृतिक पाठ्य सामग्री का नितांत अभाव है। संसाधनों के अभाव में शिक्षक की प्रतिबद्धता भी थकावट और निराशा में बदल सकती है।

तीसरी गहरी चुनौती है भाषाई विविधता से उत्पन्न बाधाएँ। भारत में अनेक मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। एक कक्षा में ऐसे छात्र हो सकते हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, तमिल, बंगाली या किसी क्षेत्रीय बोली हो। जब शिक्षण का माध्यम केवल एक या दो भाषाएँ होती हैं, तो अन्य भाषा-भाषी छात्र स्वाभाविक रूप से पीछे रह जाते हैं। वे न तो पाठ को पूरी तरह समझ पाते हैं और न ही अपनी समझ को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर पाते हैं। यह भाषा की बाधा उनकी बौद्धिक क्षमता के बजाय केवल भाषाई ज्ञान के आधार पर उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, जो एक गंभीर अन्याय है। बहुभाषी शिक्षकों और बहुभाषी शिक्षण सामग्री का अभाव इस समस्या को और विकट बना देता है।

चौथी महत्वपूर्ण चुनौती पाठ्यक्रम की कठोरता, एकरूपता और परीक्षा-केंद्रित दबाव है। वर्तमान पाठ्यक्रम अक्सर लचीलेपन के बजाय एक निश्चित, तयशुदा ज्ञान के संप्रेषण पर केंद्रित होता है। इसकी सामग्री और मूल्यांकन पद्धतियाँ मुख्यधारा के एक विशिष्ट समूह के अनुभवों और कौशलों को प्रतिबिंबित करती हैं। ऐसे में, विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों के लिए उससे जुड़ पाना कठिन हो जाता है। साथ ही, बोर्ड परीक्षाओं और मानकीकृत टेस्टों का दबाव शिक्षकों को त्वरित परिणाम लाने के लिए बाध्य करता है, जिसके चलते वे समावेशी पद्धतियों जैसे समूह कार्य, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम या वैकल्पिक मूल्यांकन को 'समय की बर्बादी' मानने लगते हैं। यह पाठ्यक्रम और मूल्यांकन की जड़ता समावेश के सभी प्रयासों को अवरुद्ध कर सकती है।

इन चुनौतियों के समाधान के बिना समावेशी शिक्षा का विजन अधूरा रहेगा। इनके निवारण हेतु एक बहु-स्तरीय रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें मजबूत नीतिगत सहयोग और निरंतर व्यावसायिक विकास आधारशिला के रूप में कार्य करते हैं। नीतिगत स्तर पर, समावेशी शिक्षा के लिए विशिष्ट बजट आवंटन, संसाधन केंद्रों की स्थापना, लचीले पाठ्यक्रम ढाँचे का निर्माण और बहुभाषी शिक्षण सामग्री के विकास पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षकों के लिए, एक बार के प्रशिक्षण के बजाय सहकर्मी सीखने, मेंटरशिप, कार्यशालाओं और ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर सृजित किए जाने चाहिए, ताकि वे वास्तविक कक्षा की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहें। इन प्रयासों के समन्वय से ही समावेशी शिक्षाशास्त्र की चुनौतियों को अवसरों में बदला जा सकता है।

8. निष्कर्ष

वैश्वीकृत एवं बहुसांस्कृतिक समाज की जटिल वास्तविकताओं में, विविध अधिगम आवश्यकताओं एवं पृष्ठभूमियों वाले सभी शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए समावेशी शिक्षाशास्त्र एकमात्र प्रभावी, व्यावहारिक और नैतिक रूप से अनिवार्य मार्ग है। यह शिक्षा के दर्शन में एक आमूलचूल बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता को कमी या समस्या के स्थान पर एक समृद्ध शैक्षणिक संसाधन के रूप में स्वीकार करता है।

जैसा कि अध्ययन में प्रदर्शित किया गया, पारंपरिक एकरूप शिक्षण पद्धतियाँ आज की बहुआयामी कक्षाओं की जटिलताओं के समक्ष पूर्णतः अप्रासंगिक सिद्ध हो चुकी हैं। इनकी अपर्याप्तता ने ही विभेदित शिक्षण, समानता-आधारित दृष्टिकोण तथा अधिगम के लिए सार्वभौमिक अभिकल्प (यूडीएल) जैसे व्यवस्थित एवं शोध-आधारित ढाँचों की आवश्यकता को जन्म दिया है। विभेदित शिक्षण शिक्षक को यह सशक्त उपकरण देता है कि वह विषयवस्तु, प्रक्रिया और मूल्यांकन को प्रत्येक बालक की तैयारी, रुचि और शैली के अनुरूप ढाल सके। समानता का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक छात्र को उसकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप समर्थन मिले, न कि केवल एक जैसे संसाधन, ताकि सभी समान शैक्षणिक लक्ष्यों तक पहुँचने में सक्षम हो सकें। वहीं, यूडीएल का पूर्वनियोजित ढाँचा पाठ्यक्रम को आरंभ से ही लचीला बनाता है, जिससे बहुसांस्कृतिक कक्षा में स्वाभाविक रूप से सभी का समावेश हो जाता है।

इन तीनों स्तंभों के समन्वित प्रयोग से शिक्षा को अधिक न्यायसंगत, सुलभ, प्रासंगिक और गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। एक न्यायसंगत शिक्षा व्यवस्था हर बच्चे को उसकी पूर्ण क्षमता हासिल करने का अवसर देती है, चाहे उसकी आरंभिक स्थिति कुछ भी हो। यह शिक्षा को भेदभाव और बहिष्कार के ऐतिहासिक चक्र से मुक्त करती है। सुलभता का अर्थ केवल शारीरिक पहुँच नहीं, बल्कि संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सांस्कृतिक स्तर पर भी सीखने के अवसरों तक पहुँच सुनिश्चित करना है।

अतः, यह निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशी शिक्षाशास्त्र को केवल एक विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि एक मौलिक आधारशिला के रूप में अपनाना समय की सर्वोच्च आवश्यकता है। यह आवश्यकता केवल शैक्षणिक दक्षता तक सीमित नहीं है; यह हमारे लोकतांत्रिक, बहुलवादी समाज की सामाजिक समरसता और न्याय के आदर्शों को साकार करने का भी मार्ग है। इस दिशा में सफलता के लिए शिक्षक प्रशिक्षण में क्रांतिकारी सुधार, पर्याप्त संसाधनों का आवंटन, लचीले पाठ्यक्रम का निर्माण और एक सहयोगात्मक स्कूल संस्कृति का विकास अनिवार्य शर्तें हैं। समावेशी शिक्षाशास्त्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ही यह तय करेगी कि हमारी कक्षाएँ केवल ज्ञान के केंद्र नहीं, बल्कि एक बेहतर, संवेदनशील और समावेशी विश्व के निर्माण की प्रयोगशालाएँ बन पाएँगी।

संदर्भ

- [1]. बैक्स, जेम्स ए. (2019). *बहुसांस्कृतिक शिक्षा: मुद्दे एवं परिप्रेक्ष्य* (9वां संस्करण). विले।
- [2]. बैक्स, जेम्स ए., एवं बैक्स, चेरी ए. मैकगी. (2019). *बहुसांस्कृतिक शिक्षा: मुद्दे एवं परिप्रेक्ष्य*. विले।
- [3]. बूथ, टोनी, एवं एनस्कॉ, मेल. (2016). *समावेशन एवं सहभागिता के लिए सूचकांक: सीखने, भागीदारी और खेल में विविधता का प्रबंधन*. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।
- [4]. कास्ट, डेविड एच. (2018). *सभी के लिए सीखने की सार्वभौमिक डिजाइन: व्यवहार में सिद्धांत और अभ्यास*. ब्रोक्स पब्लिशिंग कंपनी।
- [5]. एनस्कॉ, मेल, एवं फ्लोरियन, लानी. (2020). *समावेशी शिक्षाशास्त्र की अंतरराष्ट्रीय पुस्तिका*. रूटलेज।
- [6]. फ्लोरियन, लानी. (2019). *समावेशी शिक्षाशास्त्र: सभी शिक्षार्थियों की विविधता का सम्मान करना*. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।
- [7]. गे, जीनी. (2018). *सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र: प्रस्तावना*. टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- [8]. हम्मंड, ज़ारेटा. (2020). *सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण एवं मस्तिष्क: प्रामाणिक जुड़ाव और रचनात्मकता को बढ़ावा देना*. कोरविन।
- [9]. लेडसन-बिलिंग्स, ग्लोरिया. (2021). *सपने की ओर ले जाने वाली भूमि: अफ्रीकी अमेरिकी छात्रों के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र*. टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- [10]. मोल, लुइस, एवं गोंजालेज, नॉर्मा. (2020). *ज्ञान के कोष: घर और समुदाय से संसाधनों का लाभ उठाना*. टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- [11]. निएटो, सोनिया, एवं बोडे, पैटी. (2018). *बहुसांस्कृतिक शिक्षा की नींव* (7वां संस्करण). पियर्सन।
- [12]. टॉमलिंग्सन, कैरोल एन. (2014). *विभेदित कक्षा: सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करना* (2रा संस्करण). एएससीडी।
- [13]. टॉमलिंग्सन, कैरोल एन. (2017). *शैक्षिक विविधता का सम्मान कैसे करें: शिक्षण और पाठ्यक्रम में समावेशन*. एएससीडी।
- [14]. वायगोत्स्की, लेव सेमेनोविच. (1978). *समाज में मन: उच्च मानसिक प्रक्रियाओं का विकास*. हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
- [15]. विल्किंसन, लुईस, एवं किंसेला, विलियम जे. (2019). *बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में समावेश: सिद्धांत से अभ्यास तक*. गिलफोर्ड प्रेस।
- [16]. यूनेस्को. (2020). *समावेशी शिक्षा के लिए वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट: सभी के लिए शिक्षा*. यूनेस्को प्रकाशन।

Cite this Article:

Naveen Kumar Yadav, "बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में विविध अधिगम आवश्यकताओं को संबोधित करने में समावेशी शिक्षाशास्त्र की भूमिका", *International Journal of Emerging Voices in Education*, ISSN: 3107-958X (Online), Volume 1, Issue 4, pp. 07-16, December 2025.

Journal URL: <https://ijeve.com/>

DOI: <https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i4.18>